64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തിയ്യതി.....

कविता रचना

विषय : मिट्टी की पुकार

मिट्टी की बुलावा

है ! कोई सुन रहे हो क्या
मेरी टूटी यह पुकार,
गरमी में सड़ती - सड़ती
में चल बसी धरती के खेद में ।

प्यासी - प्यासी रहकर चल बसी
सुबह से श्याम,
किसी को सुनाई नही दिया
इस पवित्र मिट्टी की पुकार ।

लोग मुझे दबाकर चलते है,
न किसी को फिकर,
न किसी को ध्यान,
बस अपना काम ही काम ।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

आती है जब बारिश अपनी बूँदों
को समेटकर,
लोगों की पुकारे सुनती हूँ मैं,
अपने अगले वर्षों की आह्लाद की पुकार।

इसी धरती की मिट्टी में ही
धान्य उगलाते हैं,
फिर कहते हैं अगले वर्षा में
इस मिट्टी को मिठाते हैं।

सबकी भलाई सोचनेवाली मुझे
कोई नही समझता,
सबकी पुकार सुनती हूँ मैं,
पर मेरी कोई नही सुनता।

इसी मिट्टी में ही छोटा बच्चा
सरक-सरककर बड़े हुए हैं।
इसी मिट्टी पर ही अपने
गुठनों के बल से खड़े हुए हैं।

कैसे नही समझते लोग मुझको
जिसके जवानी से बुढ़ापे तक मरा साथ है।
मिट्टी से खेलती - खुदती लोग,
कैसे मिट्टी की पुकार न सुने ?

मिट्टी से बनी लोग,
अंत में मिट्टी में ही मिल जाएँगे।
दिल की पुकार को मत आसमाथीएँ,
सुनिये अपने दिल से ही।

कैसे भूलू मैं की,
ठंडी - ठंडी बारिश में
बच्चे मेरे खुशबू से मेहक जाती है।
अपने - आप को शांती दिलाती है।

करते है लोग मुझसे प्यार
सिर्फ तोड़ी वक्त की ज़रूरत है,
मेरी आवाज़ पहुँचने में,
मेरी दिल की बात सुनने में।

बस इसी की इंतज़ार है मुझे,
मेरी पुकार की पहचान।
मेरी प्यार का कदर,
मेरी एहसान का फल।

मिट्टी हूँ मैं, मिट्टी ही रहूँगी
लोगों को आशा देती फिरूँगी।
पुकारती रहूँगी, लोग मुझे सुनने तक,
आखिर में वो दिन भी आएँगी जब मुझे
सब अपनाएँगी।

———— * ————